पढ़ना है समझना

नानी का चश्मा

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : 2009 (1931); 2010 (1932); 2011 (1933); 2011 (1933); 2014 (1936); (2015) (1937); 2017 (1939); मार्च 2018 चैत्र 1940; अगस्त 2018 श्रावण 1940; फरवरी 2019 फाल्गुन 1940; जुलाई 2020 श्रावण 1942

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 340T RPS

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल, नरेन्द्र कुमार वर्मा

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा. अब्दुल्ला. खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-889-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए *'बरखा'* की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

नानी का चश्मा

नानी

मुनमुन

रमा

यह रमा की नानी हैं।
रमा की नानी हर समय चश्मा लगाती हैं।
नानी को किताबें पढ़ना पसंद है।
नानी रोज़ सुबह अखबार पढ़ती हैं।

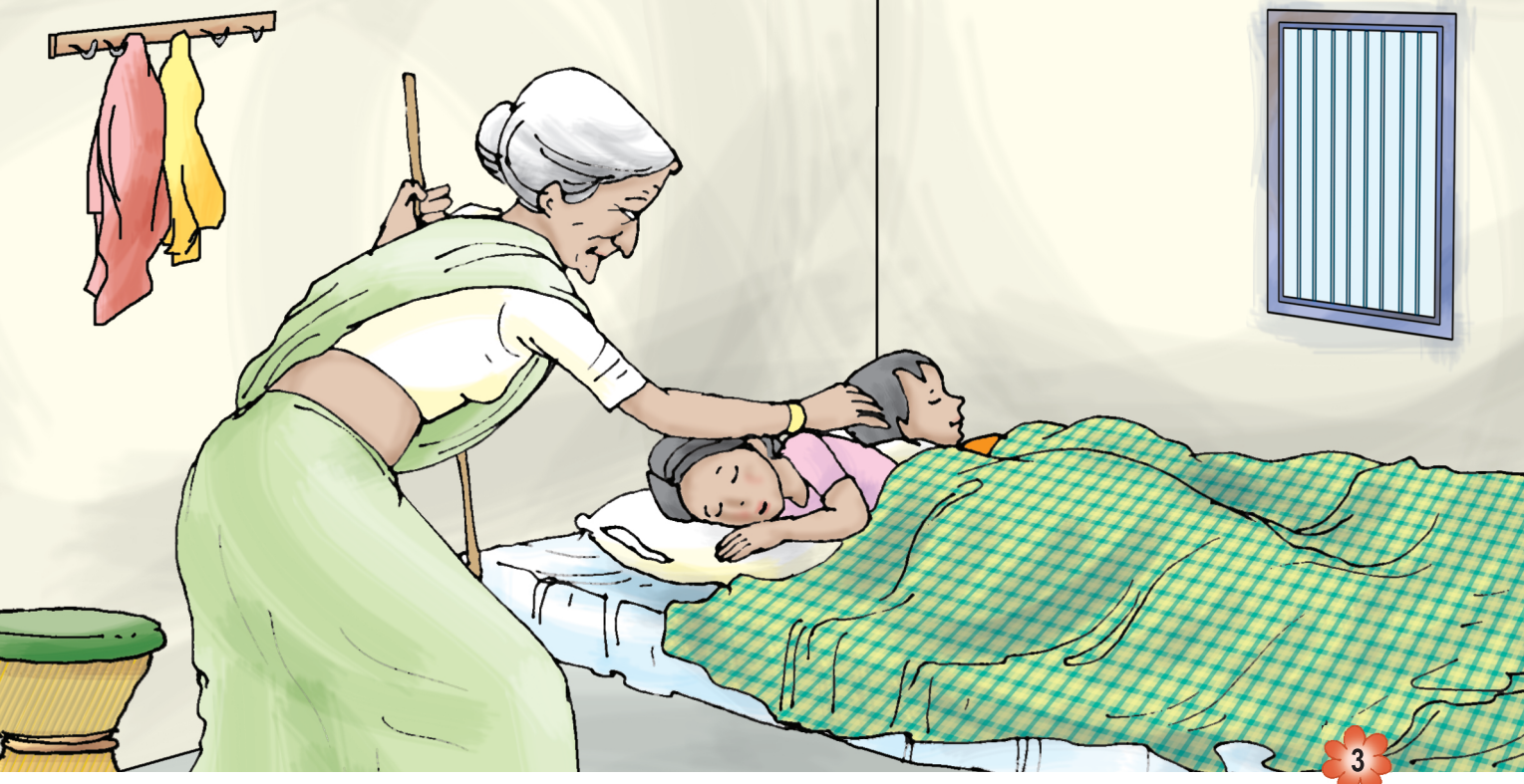

एक दिन नानी रमा को सुबह-सुबह उठाने लगीं।
नानी को अपना चश्मा नहीं मिल रहा था।
नानी को चश्मे के बिना मुश्किल हो रही थी।
वह अपनी ज़रूरी चीज़ें नहीं ढूँढ़ पा रही थीं।

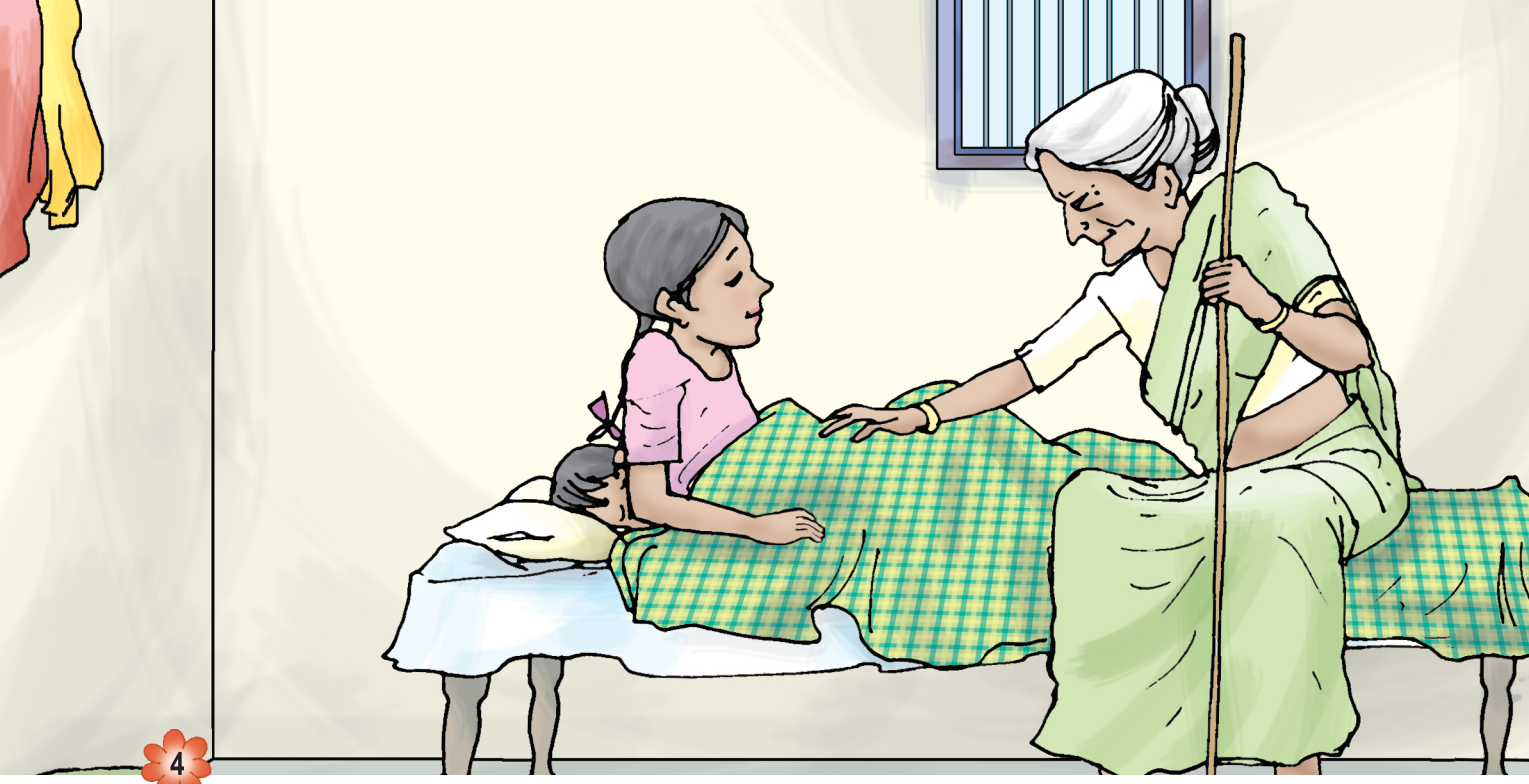

रमा बहुत गहरी नींद में थी।
वह उठ नहीं रही थी।
नानी ने रमा को बहुत प्यार से उठाया।
उन्होंने रमा को चश्मा ढूँढ़ने के लिए कहा।

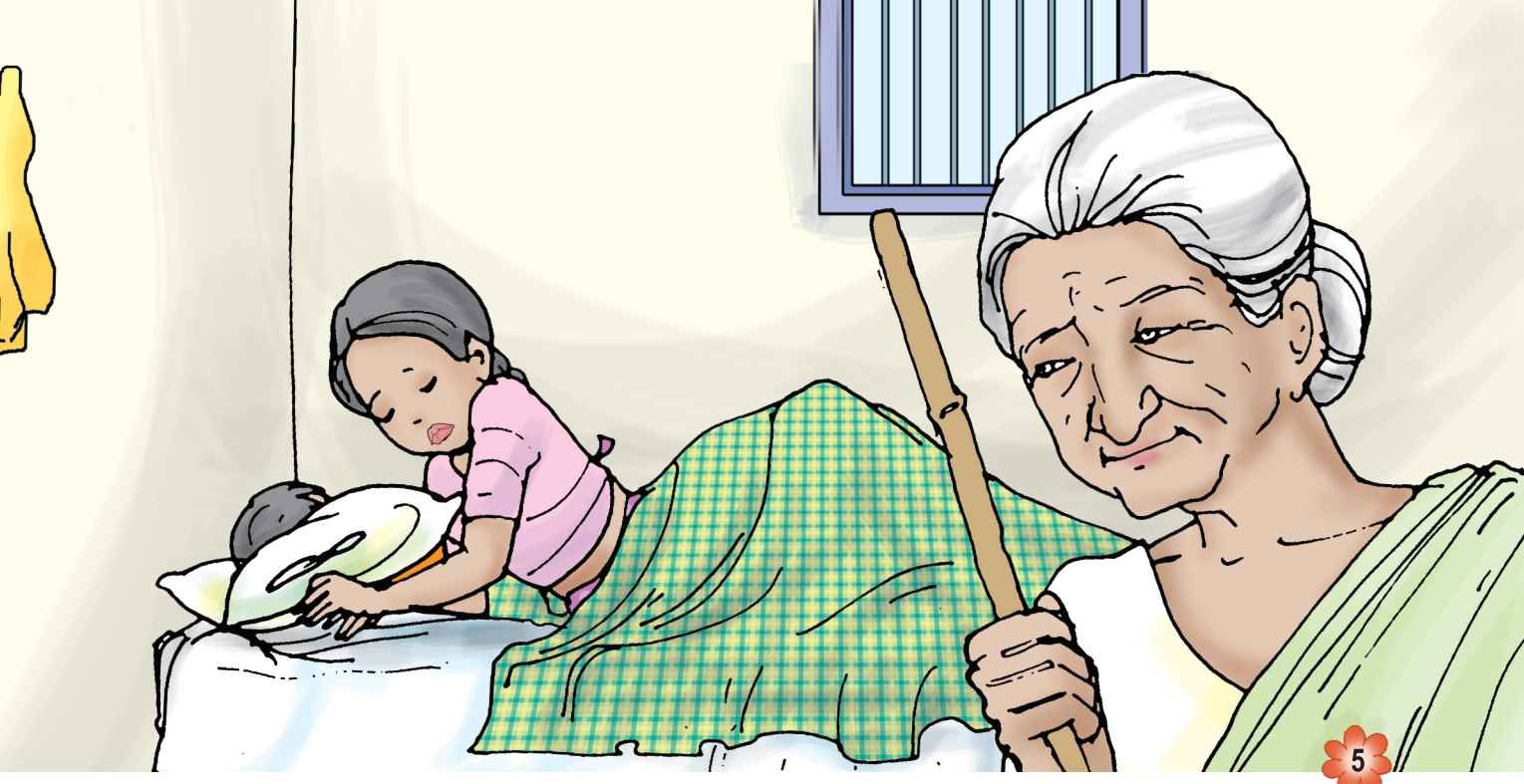

रमा नींद में ही चश्मा ढूँढ़ने लगी।
उसने तकियों के नीचे चश्मा ढूँढ़ा।
नानी चश्मे को कई बार वहाँ रख देती हैं।
चश्मा तकियों के नीचे नहीं मिला।

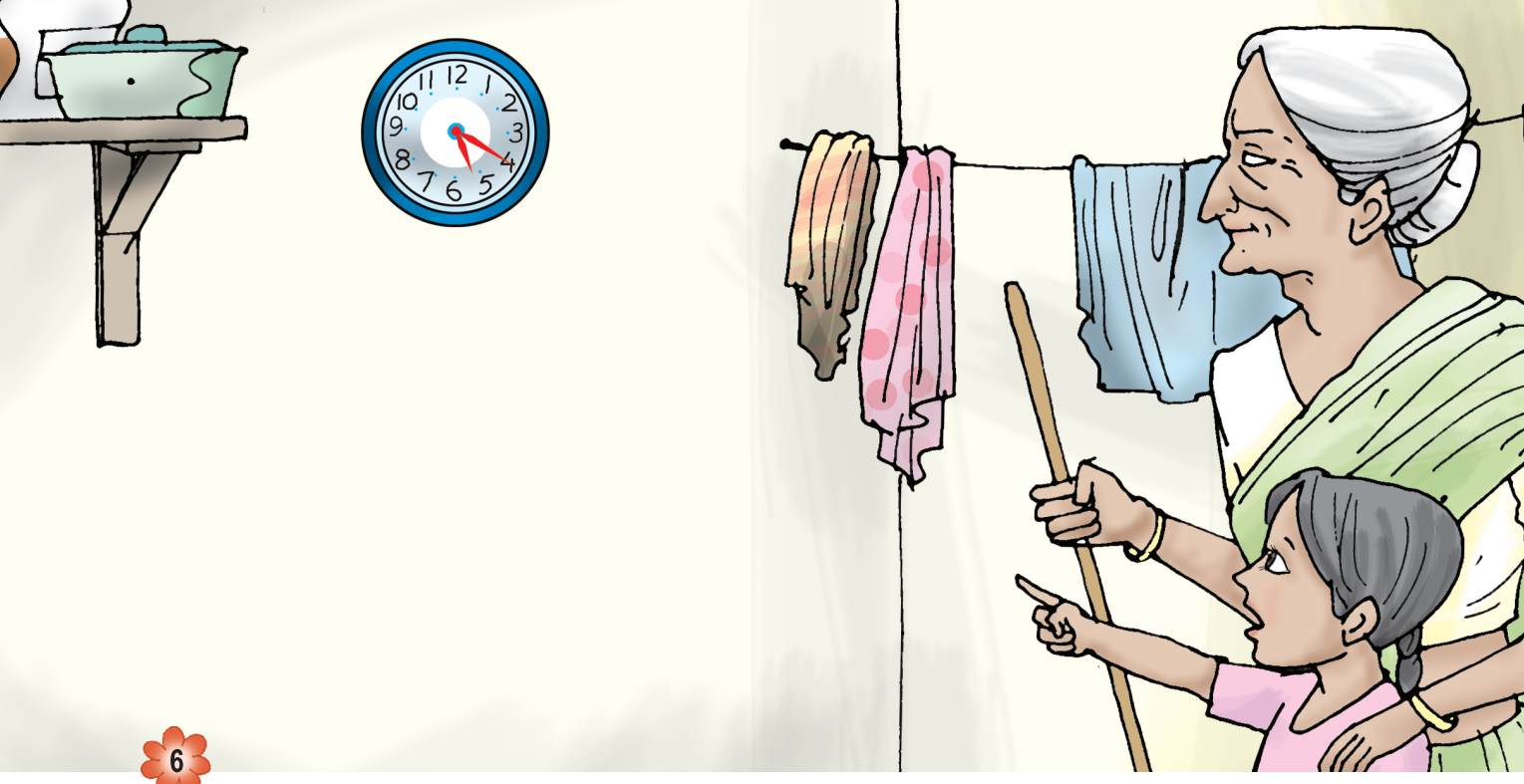

नानी ने रमा से समय पूछा।
रमा बोली कि छोटी सुई पाँच पर और बड़ी चार पर है।
साढ़े पाँच बजने वाले थे।
नानी को अखबार पढ़ना था और सैर करने जाना था।

रमा ने नानी की मेज़ पर किताबों के बीच में चश्मा ढूँढ़ा।
नानी मेज़ पर बैठकर अखबार और किताबें पढ़ती हैं।
वह अक्सर किताबों के बीच में चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा मेज़ पर नहीं था।

रमा ने चश्मा गुसलखाने में ढूँढ़ा।
गुसलखाने में बहुत सारे कपड़े पड़े हुए थे।
नानी कभी-कभी चश्मा गुसलखाने में छोड़ देती हैं।
चश्मा गुसलखाने में भी नहीं था।

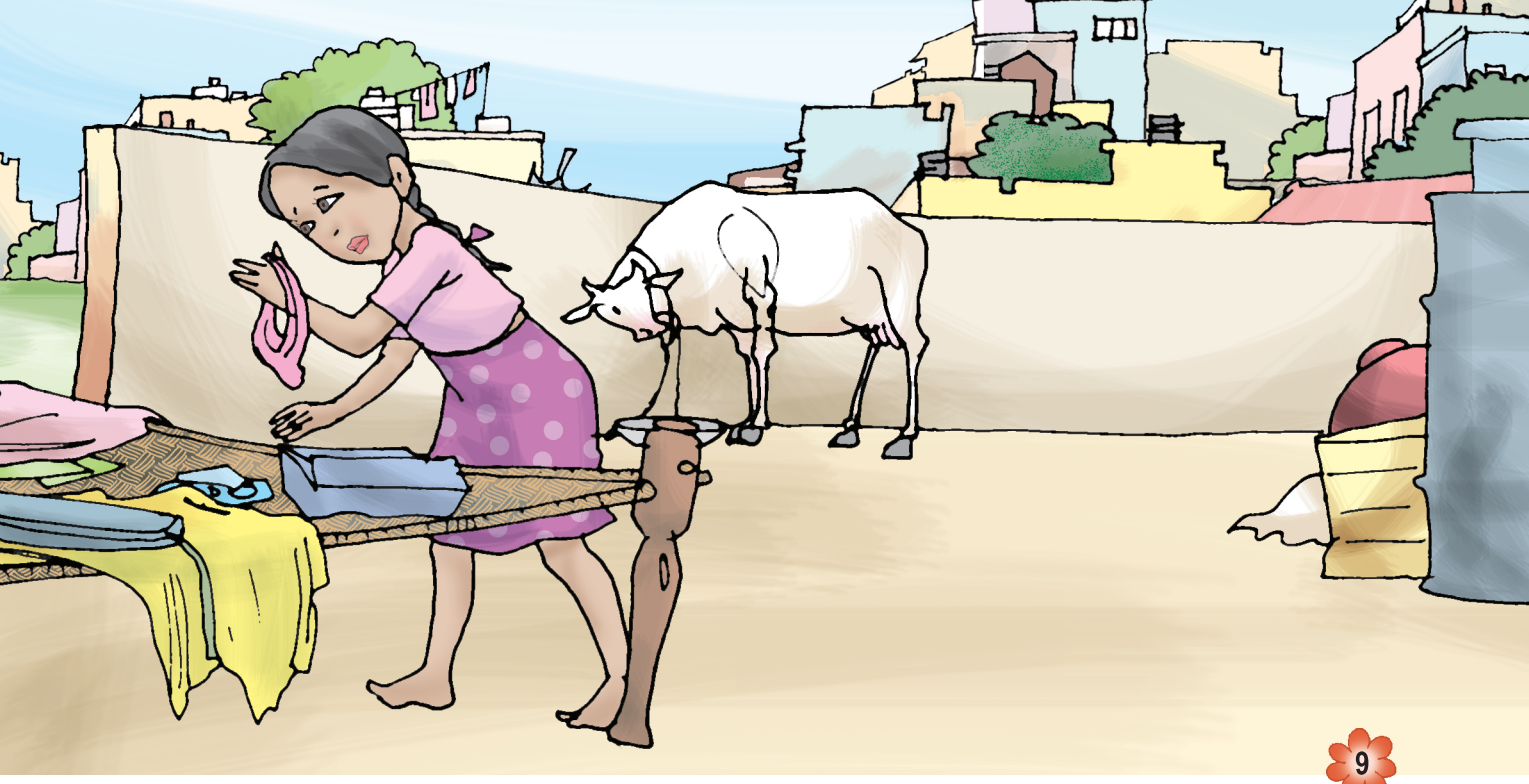

रमा ने चश्मा आँगन में ढूँढ़ा।
आँगन में बहुत सारा सामान पड़ा हुआ था।
नानी अक्सर आँगन की चारपाई पर चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा चारपाई पर भी नहीं मिला।

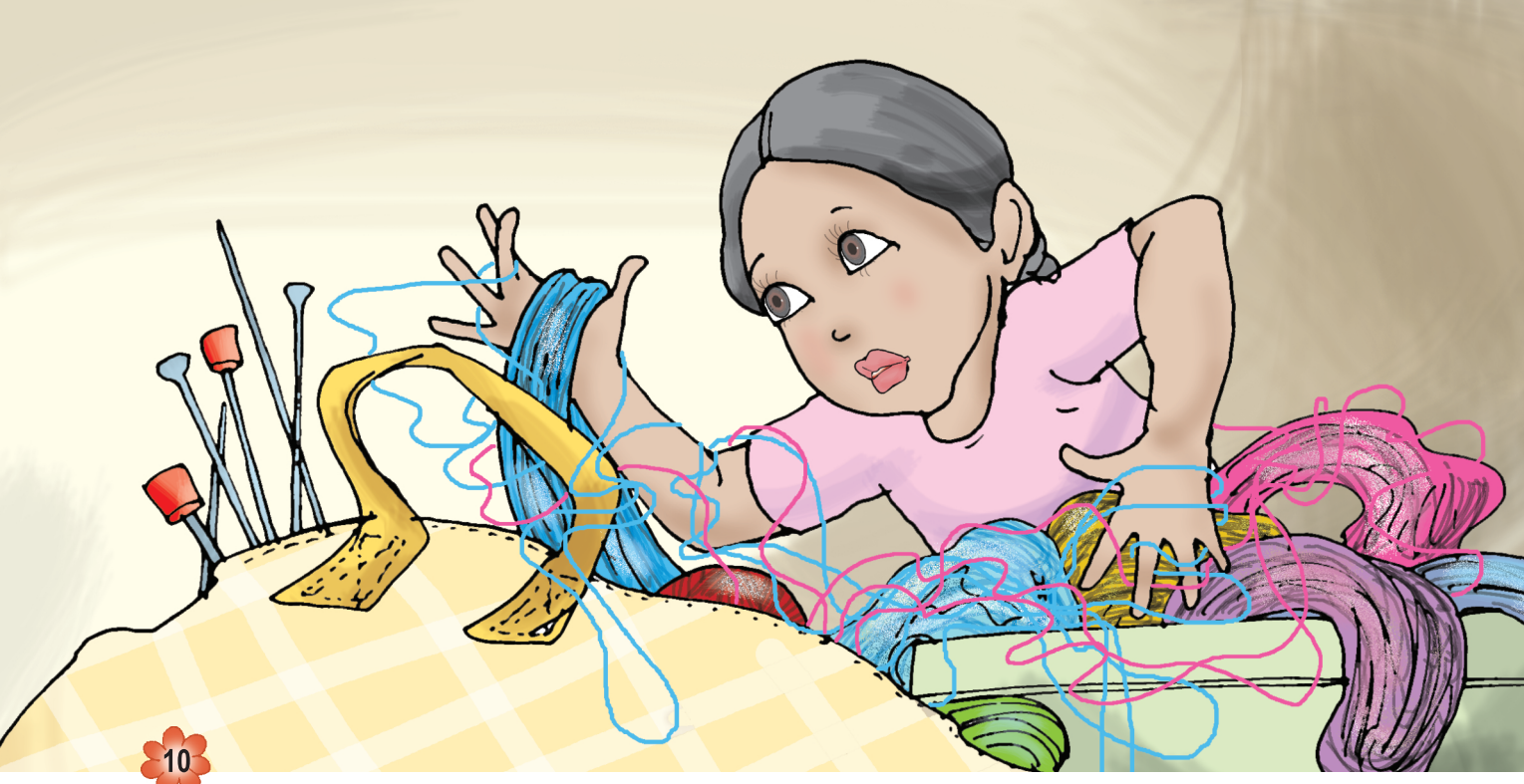

रमा ने चश्मा नानी के ऊन के थैले में ढूँढ़ा।
थैले में ऊन के बहुत सारे गोले थे।
उसमें आधे बुने हुए स्वेटर भी थे।
चश्मा थैले में भी नहीं था।

रमा ने चश्मा शीशे के पास ढूँढ़ा।
वहाँ पर कंघियाँ और तेल की शीशियाँ रखी हुई थीं।
नानी अक्सर कंघी करते समय चश्मा उतार देती हैं।
चश्मा शीशे के पास भी नहीं था।

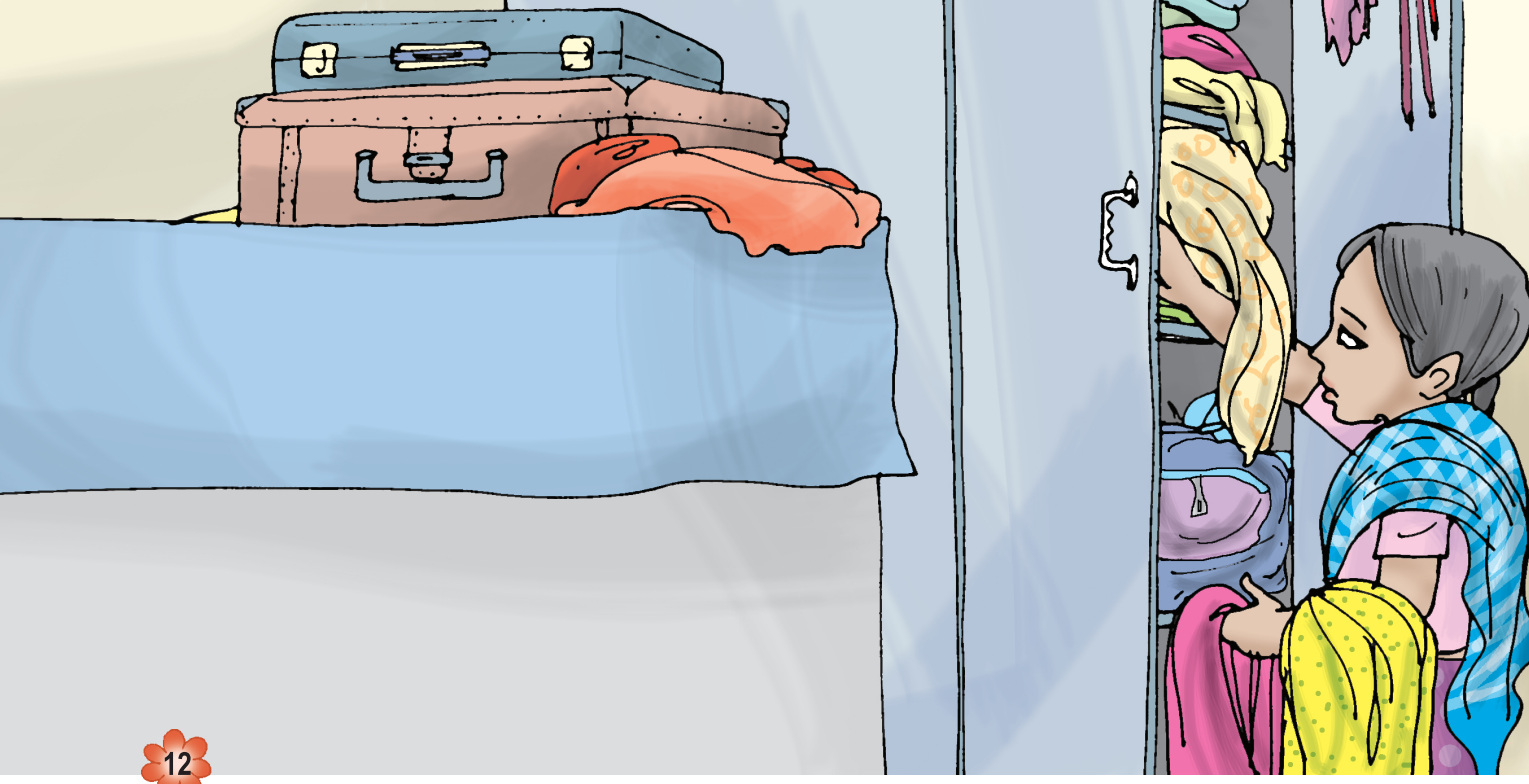

रमा ने चश्मा अलमारी में ढूँढ़ा।
अलमारी में नानी की साड़ियाँ थीं।
नानी कई बार अलमारी में चश्मा छोड़ देती हैं।
चश्मा अलमारी में भी नहीं था।

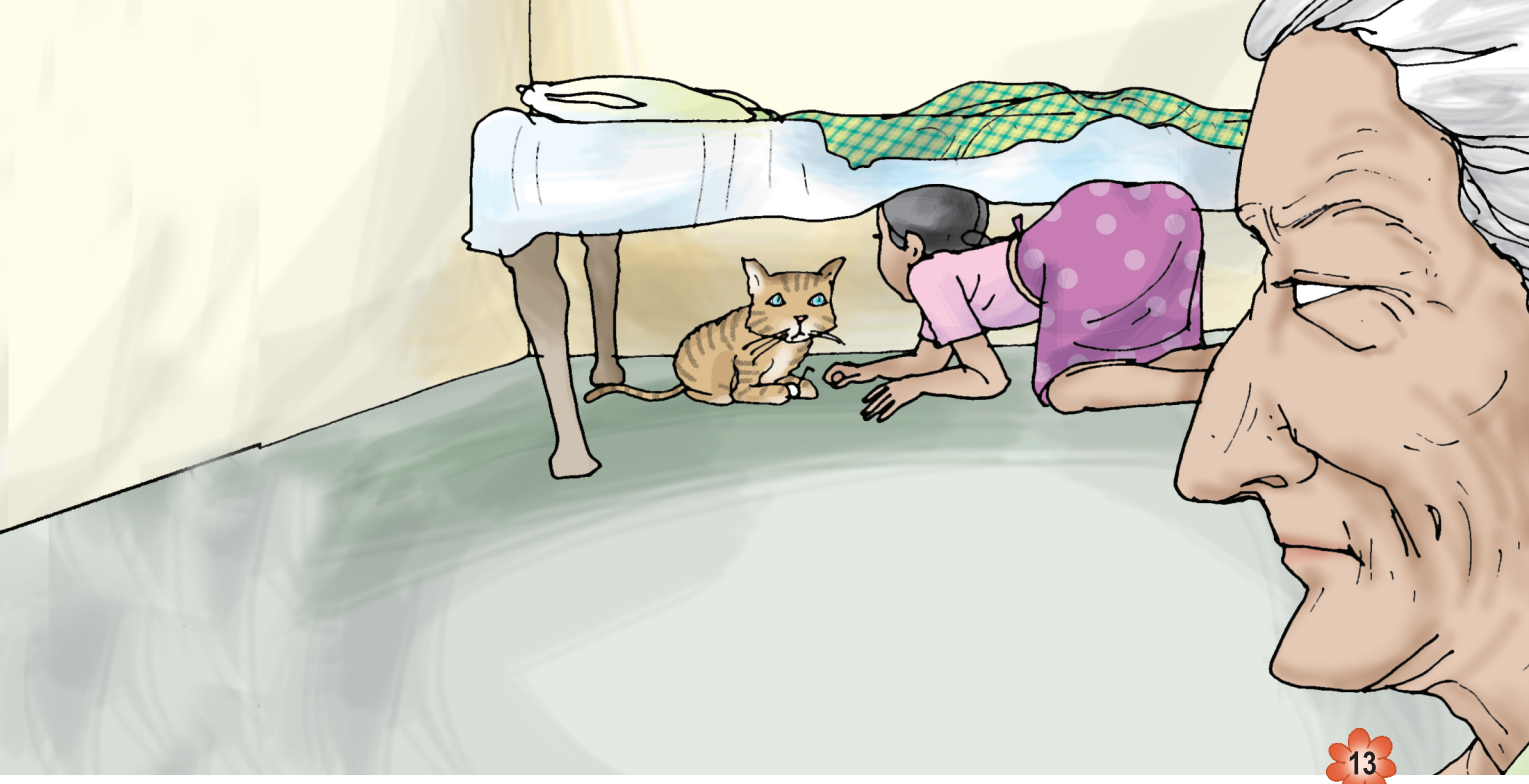

रमा चश्मा ढूँढ़ने पलंग के नीचे घुसी।
पलंग के नीचे मुनमुन बैठी हुई थी।
मुनमुन के पैरों के बीच में कुछ था।
वह ठीक से दिख नहीं रहा था।

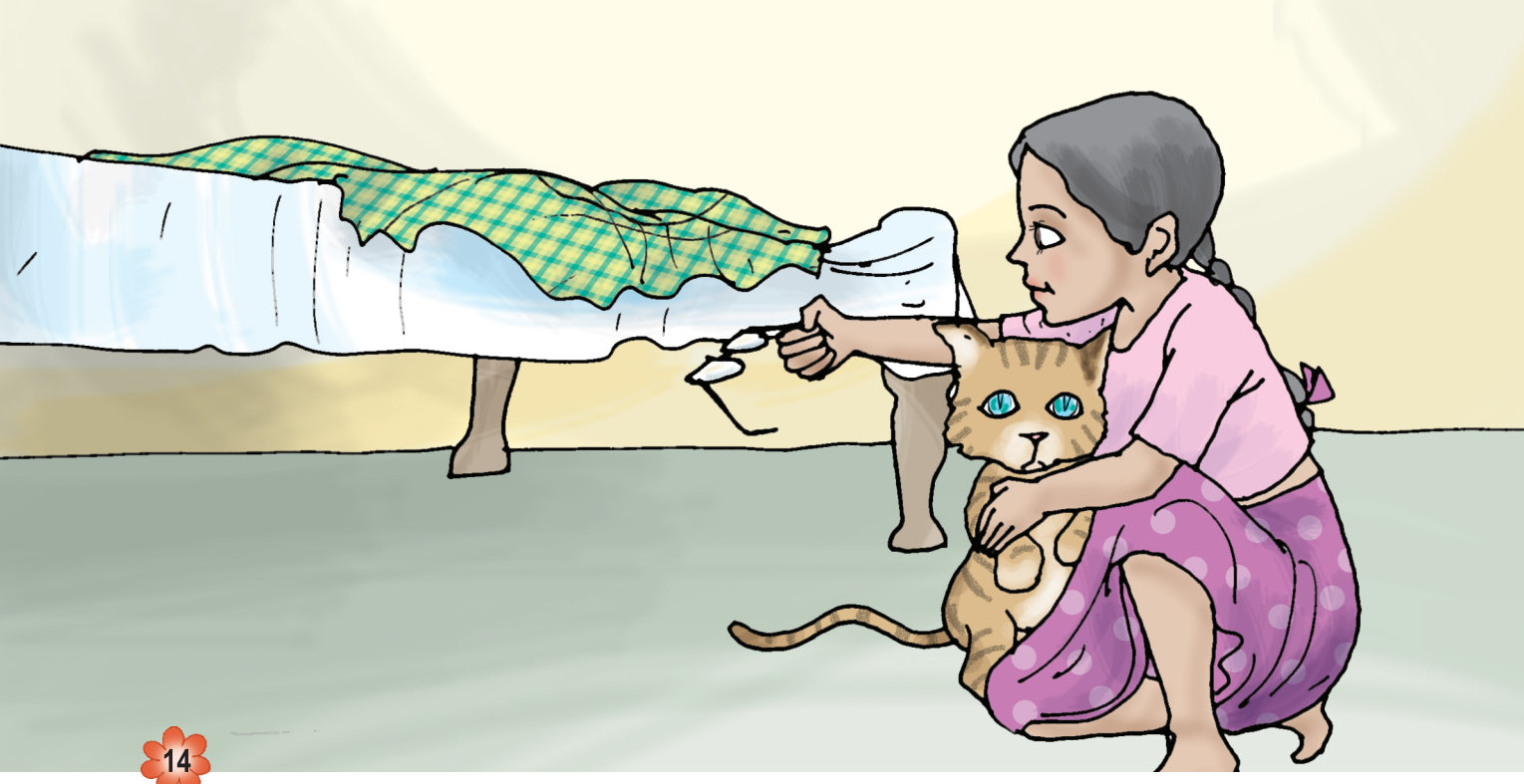

रमा ने मुनमुन को बाहर निकाला।
मुनमुन के साथ नानी का चश्मा भी आ गया।
रमा ने फौरन चश्मा उठा लिया।
वह चश्मा लेकर नानी के पास भागी।

नानी चश्मा देखकर बहुत खुश हो गईं।
उन्होंने चश्मा लगा लिया।
वह अखबार पढ़ने बैठ गईं।
नानी बहुत देर तक अखबार पढ़ती रहीं।

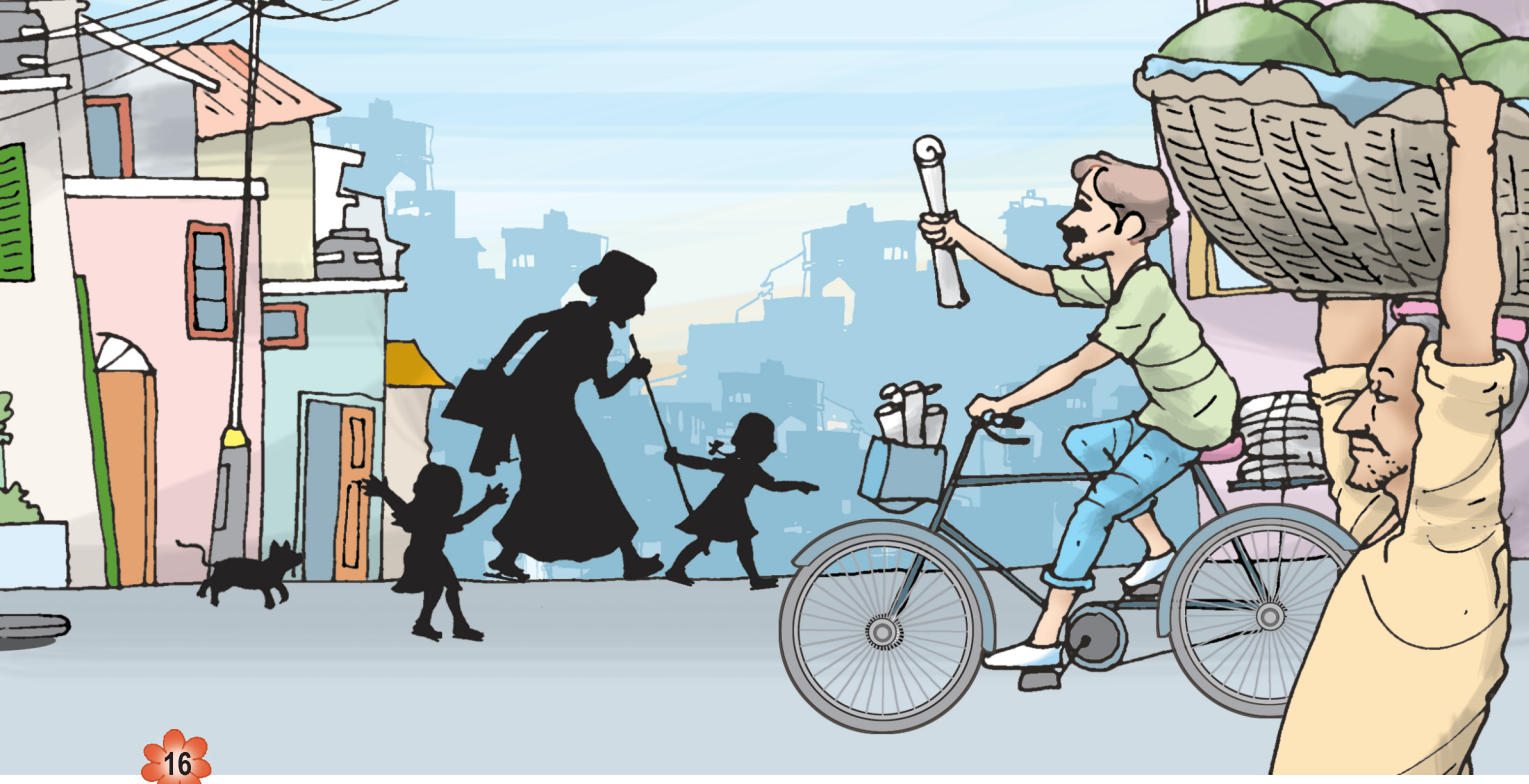

नानी ने रमा को सैर के लिए बुलाया।
रमा ने चश्मा मुनमुन को लगा दिया।
मुनमुन चश्मा लगाकर बड़ी सुंदर लग रही थी।
फिर तीनों सैर के लिए निकल गए।

रमा और रानी की और कहानियाँ

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

2088
विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा–सैट)
978-81-7450-889-8